कृषि विज्ञान केन्द्र
गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चूरू (राज.)

ई–न्यूज लेटर

फरवरी 2026, अंक: 22

VB-GRAMG व्यापक जागरूकता अभियान कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर द्वारा ग्रामीण समुदाय को केंद्र सरकार की प्रस्तावित विकसित भारत ग्रामीण रोजगार एवं आजीविका गारंटी मिशन (VB-GRAMG) के उद्देश्यों, संभावनाओं एवं लाभों से अवगत कराने हेतु दिनांक 3 जनवरी 2026 से 9 जनवरी 2026 तक ग्राम स्तर पर सघन जागरूकता एवं प्रसार अभियानों के आयोजन किए गए।इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन, आजीविका सुदृढ़ीकरण, कृषि आधारित गतिविधियों को प्रोत्साहन तथा आत्मनिर्भर गांवों के निर्माण की अवधारणा को जन-जन तक पहुँचाना रहा। अभियान के अंतर्गत सरदारशहर एवं रतनगढ़ तहसील के विभिन्न गांवों जैसे देवीपुरा, हुडेरा , ढाणी पाचेरा, नैनासर, उड़सर, बायला, बरलाजसर सहित अन्य ग्रामों को सम्मिलित किया गया।

जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से कुल 476 ग्रामीण महिला एवं पुरुषों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। साथ ही इस अभियान में

स्थानीय जनप्रतिनिधियों की भी सराहनीय सहभागिता रही, जिनमें सरपंच, ब्लॉक सदस्य तथा विभिन्न राजनीतिक दलों से जुड़े कार्यकर्ता शामिल थे। जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति से कार्यक्रम को व्यापक समर्थन मिला तथा ग्रामीणों में योजना के प्रति जागरूकता एवं विश्वास और अधिक सुदृढ़ हुआ।कार्यक्रम के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के प्रसार विशेषज्ञों द्वारा विकसित भारत ग्रामीण रोजगार एवं आजीविका गारंटी मिशन की रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा की गई। ग्रामीणों को बताया गया कि इस मिशन के अंतर्गत ग्रामीण युवाओं, महिलाओं एवं किसानों को स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल विकास, स्वरोजगार, तथा कृषि एवं कृषि आधारित उद्यमों से जोड़ने पर विशेष बल दिया जाएगा।

अभियान में कृषि क्षेत्र से संबंधित विषयों पर विशेष फोकस रखा गया, जिसमें प्राकृतिक खेती, फसल विविधीकरण, कृषि-आधारित लघु उद्योग, मूल्य संवर्धन, पशुपालन, उद्यानिकी, तथा महिला स्वयं सहायता समूहों की भूमिका पर विस्तार से जानकारी दी गई। ग्रामीणों को यह भी समझाया गया कि इस मिशन के माध्यम से खेती को लाभकारी व्यवसाय के रूप में विकसित करने, किसानों की आय में वृद्धि करने तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने की दिशा में ठोस प्रयास किए जाएंगे।कृषि विज्ञान केंद्र के विशेषज्ञों ने बताया कि यह मिशन ग्रामीण भारत के लिए पूर्ववर्ती रोजगार कार्यक्रमों के अनुभवों को आधार बनाते हुए, रोजगार के साथ-साथ स्थायी आजीविका, कौशल आधारित विकास एवं कृषि नवाचार को बढ़ावा देने की सोच पर आधारित है। यह जागरूकता अभियान ग्रामीण समुदाय को विकसित भारत की परिकल्पना से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली पहल सिद्ध हुआ।

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के लिए उद्यमिता एवं स्वरोजगार पर जागरूकता बैठक का आयोजन

कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर द्वारा दिनांक 7 जनवरी 2026 को सरदारशहर तहसील के उड़सर गांव में स्वयं सहायता समूह (SHG) की महिलाओं के साथ एक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार एवं उद्यमिता विकास के माध्यम से अपनी आय सृजन हेतु प्रोत्साहित करना तथा उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना रहा। कार्यक्रम में स्वयं सहायता समूह की कुल 18 महिलाओं ने सक्रिय सहभागिता की। बैठक के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र की विषय विशेषज्ञ डॉ. रमन जोधा द्वारा महिलाओं को वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण से उद्यमिता विकास की जानकारी प्रदान की गई। उन्होंने बताया कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का एक सशक्त माध्यम है, जिसके माध्यम से महिलाएं समूह आधारित गतिविधियों को अपनाकर स्थायी आजीविका के अवसर विकसित कर सकती हैं। महिलाओं को कृषि एवं कृषि आधारित उद्यमों जैसे मूल्य संवर्धन गतिविधियाँ (मसाला निर्माण, अचार-पापड़, मिलेट आधारित उत्पाद), पशुपालन एवं दुग्ध उत्पाद, सब्जी उत्पादन, किचन गार्डन, बीज उत्पादन, प्राकृतिक खेती आधारित उत्पाद तथा ग्रामीण कुटीर उद्योगों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने यह भी बताया कि स्थानीय संसाधनों, कम लागत तकनीकों एवं समूह शक्ति के माध्यम से छोटे स्तर से व्यवसाय प्रारंभ कर नियमित आय अर्जित की जा सकती है।

बैठक के दौरान महिलाओं को उद्यम चयन, उत्पादन तकनीक, गुणवत्ता नियंत्रण, पैकेजिंग, ब्रांडिंग, विपणन, बैंक लिंकेज एवं विभिन्न सरकारी योजनाओं से जुड़कर उद्यम को सफलतापूर्वक विकसित करने की प्रक्रिया को सरल भाषा में समझाया गया। कार्यक्रम के अंत में महिलाओं द्वारा स्वरोजगार से संबंधित अपनी जिज्ञासाएँ साझा की गईं, जिनका समाधान किया गया ।

ग्वारपाठा उन्नत खेती तकनीक पर कृषक-वैज्ञानिक संवाद का आयोजन

दिनांक 16 जनवरी 2026 को कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर के कॉन्फ्रेंस हॉल में ग्वारपाठा (एलोवेरा) की उन्नत खेती तकनीक विषय पर कृषक-वैज्ञानिक संवाद (Farmer Scientist Interaction) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को ग्वारपाठा की वैज्ञानिक खेती, उत्पादन बढ़ाने की तकनीक एवं आय संवर्धन के अवसरों से अवगत कराना रहा। इस संवाद कार्यक्रम में ग्राम हरियासर, मालसर, भोलूसर पुलासर क्षेत्र के 18 किसानों ने सहभागिता की। इस संवाद के दौरान किसानों ने ग्वारपाठा की खेती से जुड़े अपने व्यावहारिक अनुभव, समस्याएँ एवं सुझाव वैज्ञानिकों के समक्ष रखे। कार्यक्रम में एलोवेरा नर्सरी प्रबंधन, रोपाई का उपयुक्त समय व विधि, पौध दूरी, सिंचाई व्यवस्था, जैविक एवं संतुलित पोषण प्रबंधन, खरपतवार प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही एलोवेरा की कटाई-छंटाई, उपज बढ़ाने की तकनीक तथा दीर्घकालीन उत्पादन क्षमता बनाए रखने के उपायों पर भी विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन दिया गया। संवाद के दौरान एलोवेरा से जुड़े विपणन पक्ष पर विशेष जोर दिया गया, जिसमें कच्चे एलोवेरा की बिक्री, स्थानीय एवं बाहरी बाजारों की जानकारी, प्रसंस्करण की संभावनाएँ, एलोवेरा जेल एवं अन्य मूल्य संवर्धित उत्पादों के निर्माण, पैकेजिंग, ब्रांडिंग तथा उचित मूल्य प्राप्त करने की रणनीतियों पर चर्चा की गई। किसानों को एलोवेरा आधारित औषधीय, सौंदर्य प्रसाधन एवं पोषण उत्पादों की बढ़ती मांग से अवगत कराते हुए इसे आयवर्धन का सशक्त साधन बताया गया। इस कृषक-वैज्ञानिक संवाद के माध्यम से किसानों में ग्वारपाठा की वैज्ञानिक एवं व्यवसायिक खेती को लेकर जागरूकता बढ़ी तथा उन्होंने इसे एक लाभकारी वैकल्पिक फसल के रूप में अपनाने में रुचि दिखाई। कार्यक्रम के दौरान किसानों ने सक्रिय रूप से प्रश्न पूछे एवं संवाद में भाग लिया एवं किसानों की खेती से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा कर उनके व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक समाधान बताए गए।

सर्दी के मौसम में पशुओं की देखभाल विषय पर प्रशिक्षण

दिनांक 19 जनवरी 2026 को कृषि विज्ञान केंद्र में सर्दी के मौसम में पशुओं की देखभाल विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में गांव बरलाजसर, सरदारशहर की 20 महिला पशुपालकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सर्दी के मौसम में पशुओं को होने वाली बीमारियों से बचाव, उत्पादन क्षमता बनाए रखने तथा पशु स्वास्थ्य सुधार के लिए वैज्ञानिक जानकारी प्रदान की गई।प्रशिक्षण कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञ श्री श्याम बिहारी, द्वारा महिलाओं को वीडियो प्रस्तुति के माध्यम से सर्दी में पशुओं के लिए उचित आवास व्यवस्था, ठंड से बचाव के उपाय, पशु शेड की सफाई एवं स्वच्छता, बिछावन प्रबंधन तथा हवा से बचाव की वैज्ञानिक विधियों पर प्रशिक्षण प्रदान किया ।

श्री श्याम बिहारी द्वारा महिलाओं को सर्दी के मौसम में पशुओं के लिए संतुलित आहार, खनिज मिश्रण, स्वच्छ एवं गुनगुने पानी की व्यवस्था, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के उपाय तथा सामान्य सर्दीजनित रोगों के लक्षण एवं रोकथाम के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि समय पर देखभाल एवं वैज्ञानिक प्रबंधन अपनाकर दुग्ध उत्पादन में गिरावट को रोका जा सकता है।प्रशिक्षण के दौरान महिलाओं को यह भी बताया गया कि सर्दी के मौसम में नवजात बछड़ों की विशेष देखभाल अत्यंत आवश्यक होती है। बछड़ों को ठंड से बचाने, समय पर दूध पिलाने, सूखे एवं गर्म स्थान पर रखने तथा टीकाकरण एवं कृमिनाशक दवाओं के महत्व पर भी चर्चा की गई।कार्यक्रम के दौरान महिलाओं ने अपनी दैनिक पशुपालन से जुड़ी समस्याओं को साझा किया, जिनका समाधान विषय विशेषज्ञ द्वारा व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक तरीके से किया गया।

अजोला उत्पादन तकनीक एवं पोषण मूल्य पर प्रशिक्षण

दिनांक 21 जनवरी 2026 को कृषि विज्ञान केंद्र के सभागार में अजोला उत्पादन तकनीक एवं उसके पोषण मूल्य विषय पर एक दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में गांव शिमला, पूलासर, राणासर एवं दुलरासर सहित आसपास के क्षेत्रों से कुल 34 महिलाओं ने भाग लिया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य पशुपालन में अजोला के उपयोग को बढ़ावा देना तथा कम लागत में संतुलित पोषण उपलब्ध कराने हेतु प्रशिक्षित करना था। प्रशिक्षण के दौरान विषय विशेषज्ञ पशुपालन श्री श्याम बिहारी द्वारा अजोला की उत्पादन तकनीक, उसकी खेती की विधि, रखरखाव, के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि अजोला एक उच्च प्रोटीन युक्त हरा चारा है, जिसमें प्रोटीन, खनिज तत्व, कैल्शियम, आयरन तथा आवश्यक अमीनो एसिड प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो दुधारू पशुओं, बकरियों, भेड़ों एवं कुक्कुट पालन के लिए अत्यंत लाभकारी है। अजोला के नियमित उपयोग से दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, पशुओं के स्वास्थ्य में सुधार तथा चारा लागत में कमी आती है। साथ ही पशुओं को अजोला खिलाने की सही मात्रा, खिलाने की विधि एवं सावधानियों पर भी विस्तृत चर्चा की गई। प्रशिक्षण के अंत में प्रतिभागी महिलाओं ने अजोला को अपने घरेलू स्तर पर अपनाकर पशुपालन से आय बढ़ाने में रुचि दिखाई।

कृषि विज्ञान केंद्र में देसाई बैच का उद्घाटन, इनपुट डीलर्स के लिए 48 सप्ताह का व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रारंभ

कृषि विज्ञान केंद्र के सभागार में दिनांक 28 जनवरी 2026 को डिप्लोमा इन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन सर्विसेज फॉर इनपुट डीलर्स (DAESI) बैच के उद्घाटन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह डिप्लोमा पाठ्यक्रम कृषि आदान विक्रेताओं (इनपुट डीलर्स) की तकनीकी दक्षता एवं व्यावसायिक क्षमता में वृद्धि के उद्देश्य से प्रारंभ किया गया है। उद्घाटन कार्यक्रम में कुल 40 इनपुट डीलर्स ने भाग लिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता उप निदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक आत्मा ,चूरू डॉ. राजकुमार कुल्हारी द्वारा की गई। अपने अध्यक्षीय संबोधन में उन्होंने इस पाठ्यक्रम को वर्तमान कृषि परिदृश्य की आवश्यकता बताते हुए कहा कि इनपुट डीलर्स किसानों और वैज्ञानिकों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी होते हैं। यदि डीलर्स तकनीकी रूप से प्रशिक्षित होंगे तो किसान तक सही, वैज्ञानिक जानकारी पहुंच सकेगी। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य इनपुट डीलर्स को केवल विक्रेता न रहकर प्रशिक्षित कृषि सलाहकार के रूप में विकसित करना है, जिससे वे किसानों को गुणवत्तापूर्ण बीज, उर्वरक एवं कीटनाशकों के चयन के साथ-साथ सही तकनीकी मार्गदर्शन भी दे सकें।

केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वी.के. सैनी ने प्रशिक्षण की रूपरेखा बताते हुए जानकारी दी कि इस डिप्लोमा कार्यक्रम के अंतर्गत अगले 48 सप्ताह में सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक दोनों प्रकार की कक्षाएं आयोजित की जाएंगी।पाठ्यक्रम में फसल उत्पादन तकनीक, बीज प्रौद्योगिकी, उर्वरक प्रबंधन, मृदा स्वास्थ्य एवं मृदा परीक्षण, कीट एवं रोग प्रबंधन, पौध संरक्षण रसायनों का सुरक्षित एवं संतुलित उपयोग, कृषि कानून, कृषि विपणन, किसान परामर्श सेवाएं, विस्तार शिक्षण के सिद्धांत तथा नवीन कृषि तकनीकों जैसे सटीक कृषि एवं डिजिटल कृषि सेवाओं से संबंधित विषय शामिल किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त प्रतिभागियों को क्षेत्र भ्रमण, प्रायोगिक प्रदर्शन एवं केस स्टडी के माध्यम से व्यावहारिक ज्ञान भी प्रदान किया जाएगा।कार्यक्रम के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के विषय विशेषज्ञ एवं अधिकारी उपस्थित रहे। उन्होंने प्रतिभागियों को पाठ्यक्रम की उपयोगिता, अनुशासन, नियमित उपस्थिति एवं मूल्यांकन प्रणाली के बारे में जानकारी दी तथा प्रशिक्षण के दौरान सक्रिय सहभागिता के लिए प्रेरित किया।

संकलनकर्ता	संपादक	प्रकाशक
श्री मुकेश शर्मा (पौध सरंक्षण विशेषज्ञ) श्री हरीशकुमार रछौया (फसल उत्पादन विशेषज्ञ) श्री श्याम बिहारी (पशुपालन विशेषज्ञ) श्री अजय कुमावत (बागवानी विशेषज्ञ) श्री कानाराम सोढ (फार्म मैनेजर)	डॉ. रमन जोधा (विषय वस्तु विशेषज्ञ गृह विज्ञान) Designed श्री सुनील कुमार वी.वी.,स्टैनो Typed श्री ओ.पी.शर्मा, टाइपिस्ट	डॉ. वी. के. सैनी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर,चूरू–I